ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हिंदी ऑनलाइन कक्षा

कक्षा - नवी

विषय – हिंदी
पाठ : २
पाठ का नाम :दुःख का अधिकार
PPT 2

1. मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्रायः पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है, परंतु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं।
उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

शब्दार्थ –
पोशाक – पहरावा
विभिन्न - अलग -अलग
अड़चन - बाधा

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या –

लेखक कहता है कि मनुष्यों का पहरावा उन्हें अलग -अलग श्रेणियों में बाँट देता है। लेखक के अनुसार मनुष्यों का पहरावा ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करत। है। मनुष्यों का पहरावा ही मनुष्यों के लिए समाज के अनेक बंद दरवाज़े खोल देता है परन्तु लेखक कहता है कि समाज में कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है
कि हम समाज के ऊँचे वर्गों के लोग छोटे वर्गों की भावनाओं को समझना चाहते हैं परन्तु उस समय समाज में उन ऊँचे वर्ग के लोगों का पहनावा ही उनकी इस भावना में बाधा बन जाती है। लेखक उदाहरण देते हुए समझाते हैं कि जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को कभी भी अचानक भूमि पर नहीं गिरने देती, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारा पहरावा हमें हमारी भावनाओं को दर्शाने से रोक देता है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

2.बाजार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूज़े डलिया में और कुछ ज़मीन पर बिक्री के लिए रखे जान पड़ते थे। खरबूजों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। खरबूज़े बिक्री के लिए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? खरबूजों को बेचने वाली तो कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफककर रो रही थी।

शब्दार्थ –
डलिया – टोकरी
अधेड़ – ढलती उम्र
फफक-फफक कर - बिलख - बिलख कर

व्याख्या –
लेखक अपने द्वारा अनुभव किये गए एक दृश्य का वर्णन करता हुआ कहता है कि एक दिन लेखक ने बाजार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूजों को टोकरी में और कुछ को ज़मीन पर रखे हुए देखा, ऐसा लग रहा था कि उनको वहाँ बेचने के लिए रखा हुआ है।
खरबूजों के नज़दीक ही एक ढलती उम्र की औरत बैठी रो रही थी। लेखक कहता है कि खरबूज़े तो बेचने के लिए ही रखे गए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? क्योंकि खरबूजों को बेचने वाली औरत ने तो कपड़े में अपना मुँह छुपाया हुआ था और उसने अपने सिर को घुटनों पर रखा हुआ था और वह बुरी तरह से बिलख - बिलख कर रो रही थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

3. पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे या बाजार में खड़े लोग घृणा से उसी स्त्री के संबंध में बात कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक व्यथा-सी उठी, पर उसके रोने का कारण जानने का उपाय क्या था?

फुटपाथ पर उसके समीप बैठ सकने में मेरी पोशाक ही व्यवधान बन खड़ी हो गई। एक आदमी ने घृणा से एक तरफ़ थूकते हुए कहा, "क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है।" दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे, "अरे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।"

शब्दार्थ –

घृणा – नफ़रत

व्यथा – दुःख

व्यवधान – समस्या

बेहया – बेशर्म

नीयत – इरादा

बरकत - लाभ

व्याख्या –

लेखक कहता है कि उस औरत को इस तरह रोता हुआ देख कर आसपास पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे हुए और बाजार में खड़े लोग नफ़रत से उस औरत के बारे में ही बात कर रहे थे। लेखक कहता है कि उस औरत का रोना देखकर लेखक के मन में दुःख की अनुभूति हो रही थी,
परन्तु उसके रोने का कारण जानने का उपाय लेखक को समझ नहीं आ रहा था क्योंकि फुटपाथ पर उस औरत के नज़दीक बैठ सकने में लेखक का पहरावा लेखक के लिए समस्या खड़ी कर रहा था क्योंकि लेखक ऊँचे वर्ग का था और वह औरत छोटे वर्ग की थी। लेखक कहता है
कि उस औरत को इस अवस्था में देख कर एक आदमी ने नफरत से एक तरफ़ थूकते हुए कहा कि देखो क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे हुए अभी पूरा दिन नहीं बीता और यह बेशर्म दुकान लगा के बैठी है। वहीं खड़े दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे कि अरे, जैसा इरादा होता है अल्ला भी वैसा ही लाभ देता है।

संबंधित प्रश्न -

१. पोशाकें मनुष्य को कैसे बाँटती है?

२. पोशाक कब अड़चन बन जाती है?

३. पाठ के लेखक का नाम बताइए।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM
EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow